आचार्य की गरिमा

आचार्य वह जो आचरण से शिक्षा दे। बच्चों को जो कुछ हम सिखाना चाहते है उसे स्वयं जीवन में उतारने का अभ्यास आचार्य को करना होगा।

व्यक्तित्व परिष्कार का यह अनूठा माध्यम बन सकता है। ''**सादा जीवन - उच्च विचार**'' आचार्य का पर्याय हो। समय पालन, शालीनता, आचार्य के आभूषण हैं।

कक्षा की तैयारी में बच्चों का सहयोग लें। गीत, कहानी, प्रसंग कंठस्थ हो, भाव भंगिमाओं के साथ प्रस्तुत करने की विद्या सीखें। कक्षा में रोचकता बनी रहे। बच्चों को भागीदारी व नेतृत्व के लिए प्रोत्साहित करें। इसी के साथ-साथ ट्यूटोरियल कक्षाऐं एवं कामकाजी बच्चों को अक्षर ज्ञान भी कराया जाये।

त्योहार, पर्व, महापुरूषों की जयंती पर बच्चों को प्रेरणा दें। उनके जन्म दिन मनायें।

पालकों से सम्पर्क बनाये रखें। बच्चों को सहयोग देने के लिए उन्हें प्रेरणा दें। बच्चों को गृह कार्य ऐसा दे जिससे उनके भीतर सृजनात्मकता का विकास हो। स्मरण रहें- बच्चों का मूल्यांकन आचार्य का मूल्यांकन है।

बाल संस्कार शाला मार्गदर्शक साहित्य

- बाल संस्कार शाला मार्गदर्शिका
- शिक्षा एवं विद्या (वाड़मय् 49)
- हितोपदेश की कहानियाँ
- बाल निर्माण की कहानियाँ (16भाग)
- हमारी भावी पीढ़ी एवं उसका नव निर्माण (वाड़मय् 63)
- समाचार पत्रों के प्रेरक तथ्य/ कारूणिक घटनायें
- प्रेरणाप्रद दृष्टांत (वाड़मय् 67)
- उपनिषद की कथायें
- पंचतंत्र की कथायें
- बोध कथायें

एक परिजन - एक विद्यालय

बाल संस्कार शाला का क्रम विद्यालय में भी प्राचार्य/हेडमास्टर के अनुमति से चलाया जा सकता है। एक पीरियड- नैतिक शिक्षा की कक्षा के रूप में लिया जा सकता है जिसमें बाल संस्कार शाला के पाठ्यक्रम को पढ़ाया जा सकता है। साथ ही इस क्रम में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के लिए बच्चों को जोड़ा जा सकता है। संस्कृति मण्डलों के माध्यम से विद्यालयीन गतिविधियों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यालय मित्र के रूप में सहयोग दिया जा सकता है।

युग साहित्य की स्थापना, पत्रिकाओं की सदस्यता का प्रयास भी संभव है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार

संपर्क - युवा जागृति अभियान एवं सप्त आंदोलन,
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
फोन नं.- (1334) 260602 (एक्स.436)
Email : youthcell@awgp.org • Web : www.awgp.org

बाल संस्कार शाला

(समस्त क्रांतियों का आधार बाल संस्कार)

नयी पीढ़ी का नव निर्माण

''देश में सब कुछ है बस व्यक्तित्व नहीं। कहने को तो लोग बहुत हैं, जनसंख्या भी दिनों-दिन बढ़ रहीं है, पर खरे-परखे उच्च स्तरीय व्यक्ति नहीं हैं । आज के हिन्दुस्तान में न तो गांधी है, न सुभाष, न लोकमान्य तिलक है और न स्वामी विवेकानंद । पर हम गढ़ेंगे और यह सब हम इस शरीर को छोड़ने के बाद करेंगे।

चिन्ता की बात नहीं, तुम लोगों से करायेंगे। तुम्हें कुछ नहीं करना है। मैं तुम लोगों के पास नीई पीढ़ी के बच्चे लाऊँगा। तुम उनके पास बैठना, उनसे अच्छी-अच्छी बातें करना, उन्हें साधनाएँ कराना, बाकी पीछे मैं सब कर दूंगा। स्थूल क्रियाकलापों को उत्कृष्ट बनाने की जिम्मेदारी तुम्हारी और सूक्ष्म में परिवर्तन, प्रत्यावर्तन करने की जिम्मेदारी हमारी।''

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
अखण्ड ज्योति, सितम्बर-2005

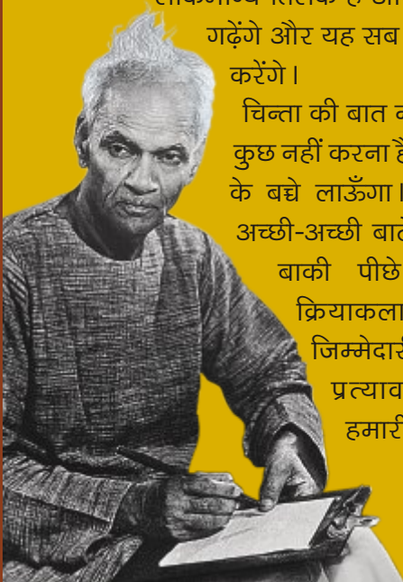

संस्कृति का मूल - संस्कार

हमारी संस्कृति महामानवों की टकसाल रही है, हर व्यक्ति का आचरण देवत्व से भरपूर। इन सब के पीछे था उनका प्रेरणाप्रद बचपन। हम सब जानते हैं कि हमारे व्यक्तित्व का 75% विकास 5 वर्ष की उम्र तक हो जाता है जिसे ध्यान में रखते हुए संस्कार परिपाटी का प्रचलन आरंभ से ही रहा है। पारिवारिक पंचशील और आस्तिकता से ओतप्रोत उत्कृष्ट वातावरण से बच्चों के दिव्य संस्कारों का रोपण सहज ही हो जाता था। बालक के बहुआयामी व्यक्तित्व के गढ़ने में माता पिता गुरू होते थे वहीं समाज का भी महत्वपूर्ण योगदान होता था।

वर्तमान संकट

बच्चे का जन्म एक एक्सीडेंट है जहाँ माता पिता आगामी जिम्मेदारी से पूर्णतः अनभिज्ञ होते हैं। बच्चे का निर्माण कैसे हो इनका ज्ञान उन्हें नहीं होता। हर तरह के भौतिक साधन सुविधाओं को बालक के लिए जुटा देना ही उन्हें अपना कर्तव्य जान पड़ता है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में भी संस्कारों का विलोप हो गया है। स्वार्थ परता, शार्टकट सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता बालक माता पिता का गौरव हो गया है। अनियमित, असंयमित दिनचर्या के साथ फास्ट फूड, जंक फूड ने नई पीढ़ी को श्रमशीलता से दूर कर दिया है।

युग ऋषि ने सुझाया समाधान

वर्तमान की समस्त समस्याओं का निकट भविष्य में समाधान के साथ संस्कारवान नई पीढ़ी को गढ़ने का एक मात्र विकल्प है उन्हे संस्कारवान बनाना। बाल संस्कार शाला इस महती आवश्यकता को पूर्ण करता है। नौनिहालों के शरिरिक, मानसिक, और बौद्धिक विकास की इस योजना में उन्हें मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराया जाता है। बच्चों के माध्यम से सांस्कृतिक सामाजिक परिवर्तन सरल है। बालक एक गीली मिट्टी की तरह है जिसे किसी भी सांचे में ढ़ाला जा सकता है। अतः ईश्वरीय विभूतियों से परिपूर्ण परिवार, समाज व राष्ट्र के इस उज्ज्वल भविष्य को गढ़ने का गौरव हम पायें ।

जीवन विद्या का पाठ है - प्राण

बाल संस्कार शाला संचालन का प्राण है बच्चों को जीवन विद्या का शिक्षण। आचार्य का प्रतिबिंब होते है बच्चे। अतः जीवन विद्या का वही पाठ बच्चे पढ़ते है जो आचार्य के आचरण से छलकता है।

प्रातः जागरण से लेकर शयन तक की दिनचर्या के लगभग 24 मानवीय मूल्यों का समावेश इस पाठ में किया गया है। नियमित अभ्यास व आचरण में उतर जाने पर ये छोटे-छोटे संस्कार बच्चे को महानता के राजमार्ग का अनुगामी बना देता है। उसके भीतर छिपी दिव्यता को प्रकट कर देता है। बालक हजार मनकों के हीरे की तरह पृथक चमकने लगता है।

खेल, प्रेरक एवं मनोरंजक अभ्यास मन के साथ - साथ तन को भी पुष्ट करते हैं। वहीं सहयोग, सहकार, दया, करूणा, धैर्य, अनुशासन, साहस जैसे गुणों को उभारता है।

बाल संस्कार शाला - संचालन

हमारी मान्यता

बालक वस्तुतः भगवान का ही रूप है व संपूर्ण ईश्वरीय विभूतियों से परिपूर्ण है। मनुष्य की अर्तनिहित पूर्णता एवं दिव्यता की अभिव्यक्ति ही विद्या दान का उद्देश्य है। आचार्य उस दैवीय ज्ञान के प्रकटीकरण में उद्दीपक तथा इस मार्ग में आने वाली प्रखर बाधाओं को दूर करने वाला व्यक्तित्व है। स्वामी विवेकानन्द का कथन- “Every soul is potentially divine...” हमारी इस मान्यता की पुष्टि करता है।

सरल है संचालन

घर की बैठक, दालान, या मंदिर प्रांगण में शाला का संचालन किया जा सकता है जिसमें अधिकतम 25 बच्चों के बैढने की व्यवस्था हो। स्थान के अनुरूप बच्चों की संख्या कम की जा सकती है। बच्चों के बैठने की व्यवस्था, पीने के लिए पानी व शौच की सामान्य व्यवस्था अनिवार्य है।

रविवार को सुविधानुसार

मात्र दो घंटे के लिए कक्षा का आयोजन किया जाता है जिसमें 1 घण्टा 15 मिनट की बौद्धिक कक्षा तथा 45 मिनट खेलकूद के लिए निश्चित है।

एक श्याम पट, कुछ जानकारी देते फ्लेक्स, चाक, डस्टर से सुसज्जित कक्षा का स्थान जीवन्त हो उठता है। आचार्य हेतु ‘‘बाल संस्कार शाला मार्गदर्शिका’’ के साथ कुछ सहायक साहित्य पूर्णता भर देता है।

9 - 13 वर्ष आयुवर्ग के बच्चों का चयन इस हेतु किया जाय। बच्चे पास पड़ोस से मिल जाते हैं। परन्तु पालकों को उद्देश्य की जानकारी देकर उनकी अनुमति आवश्यक है।